

॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ मंडलानि भ्रांतमुद्धांतमित्यादीन्मार्गान् अनुलोमविलोमभेदेन द्विगुणतयाचतुर्दश ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ मंडलानां आवर्तने अनुलोमविलोमाभ्यासे ॥ ३६ ॥

तस्य तीक्ष्णैर्महावेगैर्भङ्गैः सन्नतपर्वभिः ॥ व्यहनत्कार्मुकं राजनतूणीरांश्चैव सर्वशः ॥ २८ ॥ सच्छिन्नधन्वा विरथः खड्गमुद्यम्य चानदत् ॥ वैदूर्योत्पलवर्णाभिंदति
दंतमयत्सरं ॥ २९ ॥ भ्राभ्यमाणं ततस्तंतुविमलांबरवर्चसं ॥ कालदंडोपमं मेने सुतसोमस्य धीमतः ॥ ३० ॥ सोचरत्सहसा खड्गीमंडलानि सहस्रशः ॥ चतुर्दशमहा
राजशिखावलसमन्वितः ॥ ३१ ॥ भ्रांतमुद्धांतमाविद्धमाप्नुतं विपुलं स्तृतं ॥ संपातसमुदीर्णैश्च दर्शयामास संयुगे ॥ ३२ ॥ सौबलस्तुतस्तस्य शरांश्चिक्षेप वीर्यं
वान् ॥ तानापतत एवाशु चिच्छेद परमासिना ॥ ३३ ॥ ततः क्रुद्धो महाराज सौबलः परवीरहा ॥ प्राहिणोत्सुतसोमाय शरानाशी विषोपमान् ॥ ३४ ॥ चिच्छेद तां
सुखेन शिष्या च बलेन च ॥ दर्शयन् लाघवं युद्धे तां दृष्ट्वा तस्य पराक्रमः ॥ ३५ ॥ तस्य संचरतो राजन्मंडलावर्तितदा ॥ दुरप्रेण सुतीक्ष्णेन खड्गं चिच्छेद सुप्रभं ॥
॥ ३६ ॥ सच्छिन्नः सहसा भूमौ निपपात महानसिः ॥ अधमस्य स्थितं हस्ते सुत्सरोस्तत्र भारत ॥ ३७ ॥ छिन्नमाज्ञाय निखिंशमवपुत्य पदानि षट् ॥ प्राविध्य ततः
शेषं सुतसोमो महारथः ॥ ३८ ॥ तच्छिन्नासगुणं चापं रणे तस्य महात्मनः ॥ पपात धरणीं तूष्णं स्वर्णवज्रविभूषितं ॥ ३९ ॥ सुतसोमस्ततो गच्छच्छुतकीर्त्तैर्महारथं ॥
सौबलोपि धनुर्गृह्य घोरमन्यत्सु दुर्जयं ॥ ४० ॥ अभ्ययात्पांडवानां किं निघ्नन् शत्रुगणान् बहून् ॥ तत्र नादो महानासीत्पांडवानां विशीपते ॥ ४१ ॥ सौबलं समरे
दृष्ट्वा विचरंतमभीतवत् ॥ तान्यनीकानि हस्मानि शस्त्रवंति महांति च ॥ ४२ ॥ द्राव्यमाणान्यदृश्यंत सौबलेन महात्मना ॥ यथा दैत्यचमूं राजन् देवराजो ममर्द ह ॥
तथैव पांडवीसेनां सौबलेन व्योव्यनाशयत् ॥ ४३ ॥ इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि सुतसोमसौबलयुद्धे पंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥ संजय उवाच
धृष्टुमंक्रुपो राजन् वारयामास संयुगे ॥ यथा दृष्ट्वा वने सिंहं शरभो वारयेद्युधि ॥ १ ॥ निरुद्धः पार्षतस्तेन गौतमेन बलीयसा ॥ पदात्पदं विचलितुं नाशकत्तत्र भार
त ॥ २ ॥ गौतमस्य रथं दृष्ट्वा धृष्टुम्रथं प्रति ॥ वित्रेभ्यः सर्वभूतानि क्षयं प्राप्तं च मे निरे ॥ ३ ॥ तत्रावोचन् विमनसो रथिनः सादिनस्तथा ॥ द्रोणस्य निधनान्ब्रून् सं
क्रुद्धो द्विपदां वरः ॥ ४ ॥ शारद्वतो महातेजा दिव्यास्त्रा विदुदार्धीः ॥ अपि स्वस्ति भवेदद्य धृष्टुम्रस्य गौतमात् ॥ ५ ॥ अपीयं वाहिनीं कृत्स्नामुच्येत महतो भयात् ॥ अ
प्ययं ब्राह्मणः सर्वान्नोहन्यात्समागतान् ॥ ६ ॥

अस्य असेः सुत्सरोः शोभनमुष्टेः ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ इति कर्णपर्वणि नैलकंठीये भारतभावादीये पंच
विंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥